पिछले अध्याय का —

मौन वाचन के रूप : — स्तर पर उपयोग करना पूर्णतया

मौन वाचन का प्रारम्भिक या प्राथमिक स्तर पर तो सस्वर वाचन ही उपयुक्त रहता है। मौन

अनुचित है। इस स्तर पर तो सस्वर वाचन ही करना उचित है।

वाचन का आरम्भ आठवीं कक्षा से ही करना उचित है। पद्य पाठों से

मौन वाचन के लिए सबसे अच्छा अवसर पद्य पाठों से कविता - शिक्षण में मौन

मिलता है। प्रमुख रूप से द्रुत पाठों में तथा कविता पाठ सदा सस्वर वाचन में होता

पाठ का कोई महत्व नहीं। कविता पाठ सदा सस्वर वाचन में होता है। कविता पढ़ने के लिए ही किया जाता है। मौन वाचन, समाचार पत्र, कहानी तथा वर्णन पढ़ने के लिए ही किया जाता है।

मौन वाचन के प्रकार —

1. गम्भीर मौन वाचन
2. त्वरित मौन वाचन

1. गम्भीर मौन वाचन का अर्थ प्रत्येक शब्द, वाक्य तथा भाव पर गम्भीरतापूर्वक विचार अथवा मनन करना है। अध्यापक को चाहिए कि वह छात्रों को गंभीर मौन वाचन के निम्नलिखित नियमों को समझा दे, जिससे छात्र गम्भीर मौन वाचन कर सकें —

a. वाचन का प्रयोजन सदैव दृष्टि में रखना चाहिए।

b. वाच्य वस्तु के विभिन्न अंशों को दिये जाने वाले समय की मात्रा को आवश्यकतानुसार बदलते रहना चाहिए।

c. प्रत्येक अनुच्छेद के केन्द्रीय विचार को दृढ़ता से ग्रहण करते हुए चलना चाहिए।

d. वाचन करते समय अपनी चिन्तन प्रक्रिया को चालू रखते हुए पुरानी और नई जानकारी के समन्वय के आधार पर आवश्यक परिणाम निकालते हुए चलना चाहिए।

e. पूरी बात को पढ़ चुकने पर उसकी एक रूपरेखा मन में बना लेनी चाहिए।

f. पढ़े हुए पर टिप्पणियाँ लिखते चलना चाहिए।

18

(2) त्वरित मौन पाठ का उद्देश्य विशेष रूप से मनोरंजन की प्राप्ति है। पुस्तकालय अथवा घर पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा समाचार-पत्रों का पढ़ना इस प्रकार के मौन पाठ के अन्तर्गत आता है।

मौन वाचन के लाभ —

(i) मौन वाचन में सस्वर वाचन से बहुत अधिक पढ़ा जा सकता है। बालक में थोड़े समय में अधिक पढ़ने की आदत पड़ जाती है।

(ii) मौन वाचन में केवल मस्तिष्क और आँखों पर बल पड़ता है। वागेन्द्रियाँ शान्त रूप में कार्य करती हैं, अतः मौन पाठ करने का वह सबसे सरल रूप है, जिसमें मानसिक शक्ति कम से कम व्यय होती है।

(iii) मौन वाचन में क्योंकि बालक स्वयं समझकर पढ़ने का प्रयत्न करता है। अतः उसमें स्वावलम्बन की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है। उसमें स्वयं पढ़ने, सोचने, विचार करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है।

(iv) विशेष रूप से विचारात्मक लेखों को पढ़ने के लिए मौन वाचन करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि सस्वर पाठ से लम्बे, गम्भीर व मननीय लेखों को पढ़कर समझना व आनन्द प्राप्त करना कठिन कार्य है। मौन पाठ के द्वारा पाठ्य-विषय का अध्ययन भी हो जाता है। तथा आनन्द भी प्राप्त होता है।

NOTE मौन पाठ के महत्व पर ब्राइन (Brien) ने लिखा है कि मौन वाचन में निश्चित रूप से मितव्ययता है। यह प्रतिदिन के जीवन के लिए सर्वोत्तम विधि है।

मौन वाचन के दोष —

(1) व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कारण भी सभी छात्र मौन वाचन से लाभान्वित नहीं हो पाते — कुछ विद्यार्थी सुनकर शीघ्र समझ लेते हैं और कुछ देखकर किन्तु सम्भवतः सुनने वाले की संख्या देखकर शीघ्र समझने वालों की अपेक्षा अधिक कही गई है। क्योंकि मौन वाचन में सुनने की कोई क्रिया नहीं होती। अतः अधिकतर विद्यार्थी इससे लाभ नहीं उठा सकते।

(2) इसमें क्योंकि सस्वर वाचन नहीं होता। अतः इस विधि से विद्यार्थियों में उच्चारण संबंधी त्रुटियों का परिष्कार सम्भव नहीं है। विद्यार्थियों में वार्तालाप की योग्यता का विकास नहीं हो पाता तथा वे शुद्ध व अशुद्ध बोलने में कोई अन्तर नहीं समझ पाते।

मौन वाचन के ये दोष भी ऐसे नहीं है जो दूर न किए जा सकते हों, मौन पाठ के साथ कक्षा में सस्वर पाठ भी होता है, अतः मौन पाठ के दोष नगण्य ही हैं। प्रयत्न इस बात का किया जाना चाहिए कि विद्यार्थी मौन पाठ के सिद्धान्तों को समझे तथा उनमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति जाग्रत हो।

सस्वर वाचन तथा मौन वाचन की तुलना

वाचन के मुख्य दो रूप — सस्वर / मौन

दोनों के उद्देश्य, विधि, क्रिया, गुण, तथा दोष अलग-अलग होते हैं। इनके अन्तर को स्पष्ट करने हेतु तुलना की गई है —

सस्वर वाचन	मौन वाचन
1. सस्वर वाचन में शुद्ध उच्चार का विशेष महत्व है।	1. मौन-वाचन में उच्चारण के लिए अवसर नहीं होता है।
2. इसमें ध्वनियों का बोध, उच्चारण की शुद्धता, उपयुक्त बलाघात, स्पष्टता, वाचन प्रवाह, स्वर में उतार-चढ़ाव तथा रसात्मकता की प्रधानता होती है।	2. मौन-वाचन, छात्रों द्वारा ही किया जाता है। जिससे स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास होता है।
3. वाचन में हाव-भाव, मुद्रा एवं रुचि, तथा खड़े होने के ढंग का विशेष महत्व होता है।	3. विषय-सामग्री का केन्द्रीय भाव तथा विचार ग्रहण करता है।
4. सस्वर वाचन में आदर्श-वाचन या अनुकरण वाचन कराया जाता है। जिससे छात्र शुद्ध उच्चारण सीखता है। इस प्रकार सस्वर वाचन के दो रूप हैं — a. आदर्श-वाचन (शिक्षक) b. अनुकरण-वाचन (छात्र)	4. अध्ययन सामग्री में निहित तथ्यों, भावों, विचारों, को चयन करने का अवसर मिलता है। छात्र उसका सारांश बतला सकता है।
5. सस्वर वाचन शिक्षण के लिए अनेक विधियों तथा माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। अक्षर-बोध, कहानी, अनुकरण, ध्वनि साम्य, संगीत देखो और कहो विधियों का उपयोग किया जाता है।	5. मौन वाचन की अवस्था को शिक्षण की परिपाक अवस्था भी कहते हैं। इसमें छात्र को अपनी गति से वाचन तथा बोधगम्य करने का अवसर मिलता है। छात्रों को मौन-वाचन में अधिक स्वतन्त्रता होती है।
6. सस्वर वाचन वैयक्तिक तथा सामुहिक दोनों ही प्रकार से किया जाता है।	6. शिक्षक द्वारा रोक-टोक नहीं की जाती है। इसमें झिझक का भी अवसर नहीं होता है।
7. सस्वर वाचन में छात्रों को थकान शीघ्र भी होती है।	7. मौन-वाचन में किसी भी प्रकार की ध्वनि नहीं निकलती है। परन्तु शिक्षक सारांश तथा कुछ प्रश्न भी करेगा इसलिए छात्र ध्यानपूर्वक वाचन करते हैं।

8. सस्वर वाचन में अभिव्यक्ति की क्षमता अथवा सम्प्रेषण भी होता है। सस्वर वाचन भाषा की विधा तथा कौशल भी है जिसके लिए प्रशिक्षण तथा अभ्यास आवश्यक होता है।

9. सस्वर वाचन का निदान करके उसमें सुधार भी किया जाता है। शारीरिक दोष भी बाधक होता है। भौतिक पक्षों का विशेष महत्व होता है।

10. सस्वर वाचन कई रूपों में किया जाता है। भाषा प्रयोगशाला का निर्माण वाचन के शिक्षण के लिए ही किया गया है।

11. सस्वर-वाचन में उच्चारण, लय, गति, उतार-चढ़ाव पर ध्यान दिया जाता है।

8. मौन-वाचन में छात्र की एकाग्रता उस पर (स्वयं पर) अधिक निर्भर होती है। परन्तु शिक्षक सारांश तथा कुछ प्रश्न भी करेगा इसलिए ध्यानपूर्वक वाचन करते हैं।

9. मौन-वाचन में अपेक्षाकृत थकान कम होती है। परन्तु छात्र को मनन तथा चिन्तन भी करना पड़ता है।

10. प्राथमिक कक्षाओं में मौन-वाचन लाभकारी नहीं है जबकि माध्यमिक कक्षाओं के लिए अधिक उपयोगी है। गुंगा बालक भी मौन पाठ कर सकता है।

11. मौन वाचन के दो प्रकार
   1. गम्भीर वाचन तथा
   2. द्रुत वाचन

12. मौन-वाचन में भाषा, व्याकरण प्रसंग साहित्य की विधाओं, शैली, व- चरित्र भाव की भी पहिचान करता है।

<u>वाचन ~~के दोष~~ शिक्षण में सावधानियाँ</u>

वाचन-शिक्षण के समय शिक्षक को अधोलिखित सावधानियाँ रखनी चाहिए—

① जब बालक बोल रहा हो उस समय रोकना नहीं चाहिए। वाचन में अशुद्धियाँ, उच्चारण में अशुद्धियाँ होने पर वार्ता अथवा वाचन में रोकना नहीं चाहिए। बाद में वाचन की अशुद्धियों का सुधार करने का प्रयास स्वाभाविक ढंग से करना चाहिए।

② वाचन आत्म प्रकाशन तथा अभिव्यक्ति की कला है। शिक्षित व्यक्ति तथा अशिक्षित अपनी अभिव्यक्ति हेतु वाचन करते हैं। छात्रों को वाचन के प्रशिक्षण में पर्याप्त अभ्यास का अवसर देना चाहिए। इस कला का विकास अभ्यास से होता है। वाचन-अभ्यास का विशेष महत्व है।

3. आरम्भ से वाचन में शुद्ध उच्चारण पर ध्यान दिया जाये और अभ्यास कराया जाये। शुद्ध उच्चारण का आदर्श प्रस्तुत किया जाए और अनुकरण का अवसर दिया जाए।

4. छात्रों में अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित किया जाए। उन्हे उनकी रुचि का तथा अनुभव के अनुरूप विषय पर वाचन के लिए अवसर दिया जाए।

5. आरम्भ से वाचन की भाषा की शुद्धता, शुद्ध व्याकरण पर आधारित वाचन को ही प्रोत्साहित किया जाए।

6. छात्रों को उपयोगी पुस्तकों, कहानियों तथा पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने के लिए उपलब्ध कराया जाये। वाचन से पूर्व तैयारी आवश्यक होती है।

7. वाचन की कुशलता अभ्यास पर निर्भर होती है। अभ्यास के लिए निम्नांकित बातों को ध्यान में रखना चाहिए —

अ अभ्यास उद्देश्य की दृष्टि से आयोजित किये जाये।

ब अभ्यास में सरल से कठिन के सूत्र का अनुसरण किया जाए।

स बालकों की आवश्यकता एवं रुचि के अनुकूल ही अभ्यास कराया जाए।

द अभ्यास की विषयवस्तु का बोधगम्य होना भी आवश्यक है। क्रमबद्ध रूप में अभ्यास कराया जाए। अशुद्धियों का सुधार भी अभ्यास के समय किया जाए।

वाचन के दोष

(1) आवृत्ति – पुनरावृत्ति से भी उच्चारण की अशुद्धि ठीक नही होती।

(2) वाचन के दो प्रकार – सस्वर तथा मौन वाचन। सुधार एवं उपचार की क्रिया सस्वर वाचन के लिए प्रयुक्त की जा सकती है।

(3) बालको में स्थानीय प्रभाव से वाचन अशुद्ध हो जाता है। इसके लिए यदि सम्भव हो तो ऐसे वातावरण से बालक को हटाकर शुद्ध बोलने वालो के मध्य रखा जाए।